RNI/MPHIN/2013/61414

ISSN 2278-0327
Peer Reviewed
Refereed Journal

ज्योतिर्वेद-प्रस्थानम्

संस्कृत वाङ्मय की शोधपत्रिका - संस्कृत छात्रों की मार्गदर्शिका

वर्ष - 12, अंक - 6 जनवरी-फरवरी 2024

Bharatiya Jyotisham
पर्येति भाक्यन् लोकान्
भारतीय ज्योतिषम्

₹ 30

ISSN 2278 - 0327

विषय - सूची

क्र.	लेख विषय	लेखक	पृ.सं.
1.	ज्योतिषशास्त्र के अनुसार नक्षत्रसाधन विमर्श	डॉ. अशोक थपलियाल	04
2.	स्थानबल साधन	डॉ. अनिल कुमार	16
3.	कालापानी : भारत - नेपाल सीमा विवाद	आलोक कुमार सौरभ सिंह डॉ. सत्यपाल सिंह	23
4.	ऑनलाइन शिक्षण द्वारा प्रदान शिक्षा के प्रति शिक्षकों की अभिवृति का विश्लेषणात्मक अध्ययन	डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	28
5.	भारतीय चिन्तन परम्परा तथा काव्यशास्त्रों में अभिधा	डॉ. कृष्ण चन्द्र पण्डा	32
6.	शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व	डॉ. राजकुमारी गोला	36
7.	माध्यमिक स्तर पर कार्यरत् प्रधानाध्यापकों की प्रशासनिक प्रभावशीलता का अध्ययन	गौरव कुमार डॉ. मोहन लाल 'आर्य'	41
8.	मिडिल स्टेज पर अध्ययनरत सामान्य एवं विकलांग विद्यार्थियों के व्यावसायिक आकांक्षा स्तर का अध्ययन	उमरा इदरीस डॉ. राजकुमारी गोला	45
9.	क्या भारतीय बाजार में पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए केंद्रीकृत सार्वजनिक खरीद प्रणाली समय की आवश्यकता है?	डॉ. नमिता जैन	49
10.	मनोविज्ञान का संज्ञानात्मक स्वरूप और अधिगम	डॉ. कालिका प्रसाद शुक्ल	54
11.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और उच्चशिक्षा का पुनर्गठन	डॉ. अनूप कुमार पाण्डेय	58
12.	समय की सार्थकता एक विवेचन	डॉ. अर्चना कुमारी	63
13.	वैदिकसाहित्य में पंचमहाभूतों का अभिचिन्तन	डॉ. मोहिनी अरोरा	65

ISSN 2278 - 0327

शिक्षक-शिक्षा में सीखने की शैलियों का महत्त्व

डॉ. राजकुमारी गोला
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, शिक्षा विभाग
स्कूल ऑफ सोशल साईसिंज
आईएफटीएम विश्वविद्यालय, मुरादाबाद (उ.प्र.)

सार:

सीखने की शैलियाँ सीखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और समग्र शैक्षिक वातावरण में योगदान करती हैं। प्रस्तुत आलेख सीखने और सिखाने की प्रक्रिया दोनों में उनके योगदान को प्रकाश में लाने के प्रयास में सीखने की शैलियों के विभिन्न आयामों की समीक्षा करती है। इस आलेख में दी गई जानकारी शिक्षकों को ऐसी शिक्षण विधियाँ विकसित करने में मदद कर सकती है जो प्रत्येक शिक्षार्थी की सीखने की शैली से सबसे अच्छी तरह मेल खाती हों। प्रत्येक आयाम में शिक्षार्थियों की विशेषताओं को समझने से न केवल शिक्षण में वृद्धि होगी, बल्कि समग्र सीखने की प्रक्रिया में भी वृद्धि होगी।

बीजक शब्द: सीखना, शैली, शिक्षण विधि, शिक्षार्थी, आयाम।

प्रस्तावना:

सीखने की शैलियों को सीखने की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए दिखाया गया है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी विशेष सीखने की शैली होती है जो यह निर्धारित करती है कि वह अपने सीखने के माहौल के साथ कैसे बातचीत करता है। सीखने की शैलियों और सीखने की प्रक्रिया के बीच संबंध को समझना, सीखने की शैलियों के अनुसंधान के प्राथमिक लक्ष्यों में से एक है। सीखने की शैलियों का अनुसंधान इस सिद्धांत पर आधारित है कि व्यक्तियों के पास अलग-अलग उत्तेजना संवेदना पद्धतियां होती हैं, जिससे वे नई जानकारी को अवशोषित करना, बनाए रखना और संसाधित करना पसंद करते हैं (कैसिडी और ईचस, 2000; डन, 1983; हैरिसन, एंड्रयूज, और सकलोफस्के, 2003)। सीखने की शैलियों के शोध से प्राप्त जानकारी शोधकर्ताओं को ज्ञान प्रदान करती है जो सीखने की समग्र गुणवत्ता के साथ-साथ सीखने के माहौल को बेहतर बनाने में सहायक हो सकती है।

सीखने की शैलियों का अध्ययन:

1979 से पहले, संज्ञानात्मक शैली शब्द का व्यापक रूप से उन अलग-अलग तरीकों का वर्णन करने के लिए उपयोग किया जाता था जो व्यक्ति समस्याओं को समझने, सोचने और हल करने के लिए अपनाते थे (क्लैक्सटन और मुरेल, 1987; रिग्स, 1991)। शोधकर्ताओं ने बाद में विशेष संज्ञानात्मक शैलियों से मेल खाने वाली संयुक्त पाठ्यक्रम सामग्री और प्रस्तुतियों की पहचान करने के लिए 'सीखने की शैली' शब्द गढ़ा (किर्बी, 1979)। 1979 में, नेशनल एसोसिएशन ऑफ सेकेंडरी स्कूल प्रिंसिपल्स (एनएएसएसपी) ने कीफ द्वारा प्रस्तुत एक परिभाषा को स्वीकार किया, जिसमें सीखने की शैलियों को संज्ञानात्मक, भावनात्मक और शारीरिक कारकों के रूप में वर्गीकृत किया गया था, जो इस बात के संकेतक हैं कि शिक्षार्थी सीखने के वातवारण को कैसे समझते हैं, उसके साथ बातचीत करते हैं और उस पर प्रतिक्रिया करते हैं (कीफ), 1979), बाद में 1985 में, स्कार्पासी और फ्रैड ने सीखने की शैलियों की अपनी परिभाषा विकसित की, जिसमें व्यक्ति अपने वातावरण में जानकारी को समझते हैं, व्यवस्थित करते हैं और याद करते हैं। कुछ साल बाद, सीखने की शैलियों के लिए शैक्षिक परिस्थितियों के रूप में एक और परिभाषा प्रस्तुत की गई जिसके तहत शिक्षार्थी सीखना पसंद करते हैं (स्टीवर्ट और फेलिसेट्टी, 1992)। हालाँकि सीखने की शैलियों को परिभाषित करने के कई प्रयास किए गए हैं, लेकिन कोई एकल, एकीकृत परिभाषा (क्लैक्सटन और मुरेल, 1987) पर सहमति नहीं है।

सीखने की शैलियाँ शोधकर्ता उन तरीकों से अधिक चिंतित हैं जिनसे छात्र वास्तव में जो सीखते हैं उससे अधिक सीखना पसंद करते हैं। तीन प्राथमिक अवधारणाएँ हैं जो सीखने की शैलियों की रूपरेखा बनाती हैं: (1) सूचना प्रसंस्करण; (2) निर्देशात्मक प्राथमिकता; और (3) सीखने की रणनीतियाँ (कैसिडी, 2004)। जैसा कि कैसिडी द्वारा वर्णित है, सूचना प्रसंस्करण किसी व्यक्ति की सूचना प्रक्रिया को समझने की बौद्धिक क्षमता है। निर्देशात्मक प्राथमिकता को किसी व्यक्ति के लिए पसंदीदा सीखने के माहौल के रूप में वर्णित किया गया है; हालाँकि, वरीयता को मापना कठिन है।

सीखने की शैलियाँ के आयाम:

1979 में, कीफ़े ने सीखने की शैलियों के कई आयाम निर्दिष्ट किए जो थे। सीखने की प्रक्रिया में सुधार के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक माना जाता है। ये आयाम थे:

1. क्षेत्र की स्वतंत्रता बनाम निर्भरता,

2. अवधारणात्मक तौर-तरीके प्राथमिकताएं,
3. वैचारिक गति,
4. लेवलिंग बनाम शार्पनिंग,
5. वैचारिक स्तर,
6. नियंत्रण का स्थान,
7. उपलब्धि प्रेरणा,
8. सामाजिक प्रेरणा और
9. स्त्री पुरूष व्यवहार।

1. क्षेत्र की स्वतंत्रता बनाम निर्भरता (आश्रित):

हरमन विटकिन (1962) द्वारा स्थापित, स्वतंत्र बनाम आश्रित आयाम के क्षेत्र को शैक्षिक प्रक्रिया में सुधार के लिए सबसे बड़ी क्षमता के रूप में उद्धृत किया गया है (कीफ, 1979; वूल्ड्रिज, 1995)। इसकी अवधारणा सभी शिक्षण शैलियों के आयामों में सबसे अधिक शोधित है और शिक्षार्थी की धारणाओं से संबंधित है। क्षेत्र स्वतंत्र-निर्भर आयाम पारस्परिक अभिविन्यास, ध्यान अवधि, प्रतिस्पर्धात्मकता और सीखने के माहौल की संरचना के साथ आराम के स्तर के संदर्भ में शिक्षार्थी के अंतर को दर्शाता है। उदाहरण के लिए, क्षेत्र के स्वतंत्र/विश्लेषणात्मक शिक्षार्थी संदर्भ और संकेतों के लिए पर्यावरण पर निर्भर नहीं होते हैं। इसके बजाय, वे जानकारी का विश्लेषण करने और समस्याओं को स्वतंत्र रूप से हल करने में सक्षम हैं। वे अपने जीवन दृष्टिकोण में सक्रिय, स्वायत्त और आत्म-प्रेरित दिखाई देते हैं। वे औपचारिक शिक्षण स्थितियों को प्राथमिकता देते हैं जिसमें शिक्षक को सूचना का स्रोत माना जाता है। क्षेत्र-स्वतंत्र शिक्षार्थी प्रतिस्पर्धी, अवैयक्तिक और उपलब्धि-उन्मुख होते हैं (विटकिन एट अल., 1971; विटकिन एट अल., 1977; विटकिन एंड गुडएनफ, 1981)। जहां तक क्षेत्र पर निर्भर शिक्षार्थियों का सवाल है, आसपास के क्षेत्र का संगठन धारणा के तरीके को नियंत्रित करता है। धारणा के क्षेत्र-निर्भर तरीके में, क्षेत्र के कुछ हिस्से संगठित जमीन से अलग दिखाई देते हैं। जिन व्यक्तियों को आश्रित शिक्षार्थी माना जाता है वे संरचना के लिए सीखने की स्थिति के वातावरण पर निर्भर करते हैं। वे पारस्परिक रूप से उन्मुख होते हैं और बाहरी उत्तेजनाओं पर निर्भर होते हैं। सीखने के माहौल में, शिक्षक को केवल एक अन्य व्यक्ति के रूप में देखा जाता है।

2. अवधारणात्मक तौर-तरीके प्राथमिकताएँ:

अवधारणात्मक तौर-तरीके प्राथमिकताएं एक संज्ञानात्मक सीखने की शैली का आयाम है जो संवेदी के कलात्मक मोड के उपयोग के आधार पर शिक्षार्थी के अनुभवों को समझने और अनुभव करने के पसंदीदा तरीकों को मापता है (कीफ, 1979)। ऐसे परिवर्तनशील संवेदी तरीके हैं जिनका उपयोग व्यक्ति दृश्य, श्रवण, गतिज, हैप्टिक, प्रिंट, इंटरैक्टिव और घ्राण सहित अपने पर्यावरण को समझने के लिए कर सकते हैं। दृश्य शिक्षार्थी वे हैं जो अपने अनुभव के लिए दृश्य संवेदी माध्यमों को प्राथमिकता देते हैं। वे चित्र, ग्राफ़, मानचित्र, या छवियों और स्लाइड जैसे दृश्य उत्तेजनाओं द्वारा सबसे अच्छा सीखते हैं। वे रंगीन चित्रणों और मीडिया के माध्यम से जानकारी को सबसे अच्छी तरह समझते हैं। सीखने की शैली सिद्धांत के अनुसार, एक दृश्य सीखने वाले को उच्चतम स्तर की समझ और महारत हासिल करने के लिए देखना, नोटिस करना और लिखना होता है (डन, 1993; जैपल्स्का और डब, 2002)। एक बड़े मेटा-अध्ययन में, यह पाया गया कि विषय वस्तु के ग्राफिक और स्पर्श प्रदर्शन का सीखने के परिणामों पर बहुत प्रभाव पड़ा, भले ही उन्हें शिक्षार्थियों के तौर-तरीकों से मिलाने के लिए कोई भी परीक्षण किया गया हो (मार्जानो, 1998)। एक अध्ययन से पता चला है कि चित्रों का उपयोग करके दृश्य प्रदर्शन वयस्कों के लिए फायदेमंद था, दृश्य छवियों के लिए प्राथमिकता की डिग्री की परवाह किए बिना। यह उन लोगों के लिए भी विशेष रूप से फायदेमंद था जो मौखिक प्रसंस्करण पसंद करते हैं (कॉन्स्टेंटिनिडौ और बेकर, 2002)। श्रवण सीखने वाले सुनने के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। वाणी से इन्हें बहुत लाभ होता है उत्तेजक और उत्कृष्ट श्रोता हैं। उन्हें व्याख्यान सुनना, बातचीत करना और संगीत पसंद है। वे जानकारी को सबसे अच्छे से तब याद रखते हैं जब वह चर्चा के दौरान बोली/सुनी जाती है (डन, 1993; जैपल्स्का और डाब, 2002)।

गतिज शिक्षार्थी गति के माध्यम से सर्वोत्तम सीखते हैं। मानव शरीर प्राकृतिक रूप से है। गति के लिए निर्मित और गतिज शिक्षार्थी अपने शरीर को गति में रखना पसंद करते हैं। काइनेस्टेटिक शिक्षार्थी अपने शरीर को हिलाते समय जानकारी को सबसे अच्छी तरह संसाधित करते हैं। वे अपने हाथों को हिलाना पसंद करते हैं और शारीरिक गतिविधियों जैसे कि खेलना या वस्तुओं की बाजीगरी के माध्यम से ध्वनियों और संगीत पर प्रतिक्रिया करना पसंद करते हैं। वे दृश्य या श्रवण प्रस्तुतियों से चिंतित नहीं हैं और ऐसे प्रारूपों में जानकारी प्रस्तुत करते समय जानकारी को प्रभावी ढंग से संसाधित नहीं करते हैं। इसके बजाय, गतिज शिक्षार्थी ऐसे वातावरण में सबसे अच्छा सीखते हैं जहां वे सीखने की प्रक्रिया में शारीरिक रूप से शामिल हो सकते हैं (डन, 1993; जैपल्स्का और डब, 2002)। गतिज क्षेत्र के भीतर, ऐसे व्यक्ति मौजूद हैं जो व्यावहारिक गतिविधियों में भाग लेकर सबसे अच्छा सीखते हैं। इन व्यक्तियों को हैप्टिक शिक्षार्थी के रूप में वर्णित किया गया है। वे सीखने के लिए अपने स्पर्श की भावना का उपयोग करना पसंद करते हैं; इसलिए, उन्हें उन गतिविधियों से बहुत लाभ होता है जिनमें उन्हें अपने हाथों से काम करने की आवश्यकता होती है। वे कलाकृति का आनंद लेते हैं, चीजों को एक साथ जोड़ते हैं, चित्र बनाते हैं, पढ़ते समय शब्दों को रेखांकित करते हैं, सुनते समय नोट्स लेते हैं और अपने हाथों को व्यस्त रखते हैं; विशेष रूप से यदि उनकी श्रवण प्राथमिकताएँ कम हैं (वुल्ड्रिज, 1995)। कुछ व्यक्ति लिखित शब्दों के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। इन व्यक्तियों को प्रिंट पद्धति प्राथमिकता वाले के रूप में वर्गीकृत किया गया है। वे

मुद्रित सामग्री पढ़ना पसंद करते हैं और किताबें लिखते और/या पढ़ते समय सामग्री को सबसे अच्छी तरह अवशोषित करते हैं। वे लिखने के लिए बोर्ड का उपयोग करना भी पसंद करते हैं और उनमें समझने की उच्च क्षमता होती है। जिन व्यक्तियों को इंटरैक्टिव तौर-तरीके पसंद हैं, वे मौखिकीकरण के माध्यम से सबसे अच्छा सीखते हैं। वे लाइव सत्र के दौरान प्रश्न पूछने और उत्तर देने से जानकारी को सबसे अच्छी तरह समझते हैं। वे इंटरैक्टिव शिक्षार्थी हैं जो दूसरों के साथ बात करने और चर्चा करने का आनंद लेते हैं और पढ़ाई के दौरान वे खुद से ऊंची आवाज में बात करते हैं। वे दूसरों के विचारों का भी सम्मान करते हैं और समूहों में अच्छा काम करते हैं। घ्राण शिक्षार्थी वे हैं जो सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे गंध और स्वाद की अपनी भावना को शामिल करते हैं। दुर्भाग्य से, शिक्षार्थियों के बीच घ्राण इंद्रिय के महत्व के बारे में बहुत कम जानकारी है, भले ही सीखने की प्रक्रिया में इसका महत्वपूर्ण प्रभाव हो। घ्राण शिक्षार्थी एक छोटे समूह का प्रतिनिधित्व करते हैं, लेकिन वे विशिष्ट यादों के साथ गंध को जोड़कर और एक दूसरे से पदार्थों की तुलना करके सीखना पसंद करते हैं। ऐसे शिक्षार्थी व्यापक रूप से रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान और जीवविज्ञान जैसे वैज्ञानिक क्षेत्रों में फैले हुए हैं।

3. वैचारिक गति:

सीखने की क्षमता हर व्यक्ति में अलग-अलग होती है। परिणामस्वरूप, व्यक्ति अपनी व्यक्तिगत क्षमताओं के आधार पर विभिन्न दरों पर जानकारी को समझने और संसाधित करके ज्ञान प्राप्त करते हैं। वैचारिक गति एक संज्ञानात्मक चिंतनशील-आवेगपूर्ण निर्माण है। यह शैली समस्या-समाधान के समय व्यक्तियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले संज्ञानात्मक तौर-तरीकों को पहचानती है। जो शिक्षार्थी चिंतनशील संरचनाओं के बजाय आवेगपूर्ण निर्माण को अपनाते हैं वे तेजी से काम करना पसंद करते हैं और तुरंत निर्णय पर पहुंच जाते हैं। आमतौर पर, वे अपने काम में जल्दबाजी करते हैं और लापरवाह दिखाई देते हैं। जिस तीव्र गति से वे काम करते हैं, उससे अक्सर कार्य गलत तरीके से पूरा हो जाता है (क्रूइकशैंक, मेटकाफ और जेनकिंस, 2008)। जो शिक्षार्थी आवेगपूर्ण दृष्टिकोण की तुलना में अधिक चिंतनशील दृष्टिकोण अपनाते हैं, वे अंतिम निर्णय पर पहुंचने से पहले वैकल्पिक समाधानों की जांच करते हैं। चिंतनशील व्यक्ति तार्किक, सटीक प्रतिक्रिया देते हैं जबकि आवेगी शिक्षार्थी पहला उत्तर देना पसंद करते हैं जो मन में आता है, भले ही वह गलत हो (कीफ, 1979)।

4. लेवलिंग बनाम शार्पनिंग संज्ञानात्मक शैली:

1951 में, क्लेन ने सरल संज्ञानात्मक कार्य करते समय शिक्षार्थियों के बीच अंतर की पहचान करने के प्रयास में एक अध्ययन किया। इस अध्ययन ने उन्हें पहचानने के लिए प्रेरित किया सीखने वाले दो प्रकार के होते हैं: शार्पनर और लेवलर। शिक्षार्थियों के रूप में, शार्पनर वे होते हैं जो उच्च स्तर की सटीकता के साथ उत्तेजनाओं के बीच असमानताओं की पहचान करने में सक्षम होते हैं। दूसरी ओर, लेवलर उत्तेजनाओं के बीच समानता पर ध्यान केंद्रित करते हैं और मतभेदों की उपेक्षा करते हैं। लेवलर नई अर्जित जानकारी को स्पष्ट और वर्गीकृत करने के प्रयास में अतीत से कई यादों का चयन करते हैं, जिससे उन्हें अति सामान्यीकरण की ओर ले जाया जाता है। दूसरी ओर शार्पनर छोटे बदलावों का महिमा मंडन करते हैं और नए ज्ञान को संसाधित करते समय कुछ चुनिंदा पूर्व अनुभवों (यानी यादों) पर भरोसा करते हैं, जिससे वे अत्यधिक भेदभाव करते हैं (कीफ, 1979)। क्लेन के अध्ययन से पता चला है कि एक शिक्षार्थी की संज्ञानात्मक शैली ने समस्याओं को समझने और हल करने के दौरान शिक्षार्थियों द्वारा अपनाए गए तरीकों पर इसके प्रभाव के कारण उनकी समग्र सफलता में भूमिका निभाई। संज्ञानात्मक शैली को अवधारणात्मक दृष्टिकोण, पैटर्न, पूर्व निर्धारितता, संज्ञानात्मक दृष्टिकोण, प्रतिक्रियाओं के तरीके या संज्ञानात्मक प्रणाली सिद्धांतों (गार्डनर, होल्ज़मैन, क्लेन, लिंटन, और स्पेंस, 1959; होल्ज़मैन और क्लेन, 1954) के रूप में भी जाना जाता है।

5. वैचारिक स्तर:

वैचारिक स्तर को एक विकास विशेषता के रूप में वर्णित किया गया है जो यह दर्शाता है कि एक छात्र को इष्टतम सीखने के लिए कितनी संरचना की आवश्यकता है। वैचारिक स्तर को शिक्षण/ सीखने की प्रक्रिया को अनुकूलित करने का आधार माना जा सकता है (हंट, 1977)। अध्ययनों से पता चला है कि जब दो प्रकार की जानकारी प्रस्तुत की जाती है, तो कम वैचारिक स्तर वाले छात्र उच्च वैचारिक स्तर वाले छात्रों की तुलना में अपने अनुभव से अधिक प्रभावित होते हैं। उच्च वैचारिक स्तर वाले छात्रों ने निम्न वैचारिक स्तर वाले छात्रों की तुलना में व्यक्तिगत धारणा में अधिक सटीकता दिखाई है। (हंट, 1971; हंट एट अल., 1978)। वैचारिक स्तर से संबंधित अतिरिक्त कारक हैं जिम्मेदारी, प्रत्यक्ष या लगातार पर्यवेक्षण के बिना किसी कार्य को पूरा करने की छात्रों की क्षमता, संरचना की आवश्यकता, और विभिन्न व्यक्तियों द्वारा आवश्यक संरचना की मात्रा/प्रकार (कीफ, 1979)।

6. नियंत्रण का स्थान (ठिकाना):

सीखने की शैली के आयाम के रूप में नियंत्रण का स्थान शिक्षार्थी की धारणाओं में अंतर से संबंधित है जो विशिष्ट व्यवहारिक परिणामों को जन्म देता है। नियंत्रण का स्थान एक सातत्य पर आधारित होता है जिसके एक छोर पर आंतरिक नियंत्रण का स्थान होता है और दूसरे छोर पर नियंत्रण का बाहरी स्थान होता है। आंतरिक नियंत्रण वाला व्यक्ति स्वयं को अपने व्यवहार के लिए जिम्मेदार मानता है। यह उसके अपने व्यक्तिगत कार्य हैं जो या तो सफलता के लिए प्रशंसा के पात्र हैं या असफलता के लिए फटकार के। बाहरी नियंत्रण वाले व्यक्ति का मानना

है कि उसके व्यवहार के लिए भाग्य या अन्य व्यक्ति जैसी परिस्थितियां जिम्मेदार हैं (कीफ, 1979)। यह दिखाया गया है कि नियंत्रण का नियंत्रण छात्र के प्रदर्शन को प्रभावित करता है (रोटर, 1971)। जो छात्र नियंत्रण के आंतरिक नियंत्रण का प्रदर्शन करते हैं, वे स्कूल में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, परीक्षणों में बेहतर स्कोर करते हैं और उपलब्धि के उच्च स्तर तक पहुंचते हैं, उन छात्रों की तुलना में जो नियंत्रण के बाहरी नियंत्रण का प्रदर्शन करते हैं। नियंत्रण का दायरा सामाजिक-आर्थिक वर्गों के बीच उपलब्धि से भी जुड़ा हुआ है। निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चे नियंत्रण के बाहरी नियंत्रण से संबंधित व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, यह मानते हुए कि उनके व्यवहार के लिए स्वयं से बाहर की ताकतें जिम्मेदार हैं और उक्त व्यवहार के परिणामस्वरूप अंतिम सफलता और/या विफलता होती है; जबकि, उच्च सामाजिक आर्थिक पृष्ठभूमि के बच्चों का मानना है कि उनका अपने व्यवहार पर नियंत्रण है और वे अपने व्यवहार से उत्पन्न परिणामों के लिए जिम्मेदार हैं।

7. उपलब्धि प्रेरणा:

1961 में, डेविड सी. मैक्लेलैंड ने उपलब्धि प्रेरणा का एक सिद्धांत प्रस्तावित किया जो सीखने की अवधारणाओं से संबंधित था (गिब्सन, इवानसेविच, और डोनेली, 1994)। उनका सिद्धांत उन व्यवहारों पर केंद्रित था जो व्यक्ति उपलब्धि की आंतरिक भावना प्राप्त करने के लिए प्रदर्शित करते थे। उच्च उपलब्धि प्रेरणा वाले व्यक्ति पुरस्कार या प्रशंसा के लिए नहीं, बल्कि केवल अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने और उपलब्धि की भावना का अनुभव करने के लिए गतिविधियाँ या व्यवहार करते हैं। वे यथार्थवादी लक्ष्य भी निर्धारित करते हैं जिन्हें वे पूरा करने में सक्षम होंगे। कार्य करने से पहले, वे किसी विशेष व्यवहार या कार्य को सफलतापूर्वक करने की उनकी क्षमता की संभावना की गणना करते हैं। यदि उन्हें विश्वास है कि वे सफलतापूर्वक प्रदर्शन करने में सक्षम होंगे, तो वे लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए निकल पड़ेंगे; अन्यथा, वे कार्य नहीं करेंगे और इसके बजाय अधिक प्राप्य, यथार्थवादी लक्ष्य स्थापित करेंगे (कीफ, 1979)।

8. सामाजिक प्रेरणा:

सीखने की शैली के आयाम के रूप में सामाजिक प्रेरणा किसी व्यक्ति या आबादी के विश्वासों, व्यवहार और सामाजिक संबंधों को मापती है। सामाजिक प्रेरणा सांस्कृतिक प्रभाव से प्रेरित होती है। व्यवहार में अंतर किसी व्यक्ति के सामाजिक और नैतिक विश्व दृष्टिकोण या किसी आबादी द्वारा साझा किए गए दृष्टिकोण पर निर्भर करता है। इस आयाम में, शिक्षार्थी कई कारकों से प्रभावित होते हैं, जिनमें सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि, संस्कृति और उनके सहकर्मी समूहों के मानक और अपेक्षाएं शामिल हैं। विश्वासों की पुष्टि समान विश्वास रखने वाले अन्य लोगों के साथ बातचीत से होती है और उन लोगों के साथ बातचीत से अपुष्ट हो जाती है जो समान विश्वास नहीं रखते हैं (कीफ, 1979)।

9. स्त्री-पुरूष व्यवहार:

अंतिम आयाम पुरुषोचित व्यवहार आयाम है। इस आयाम का उद्देश्य पुरुषों और महिलाओं के बीच मस्तिष्क व्यवहार प्रतिक्रियाओं में अंतर को समझाना है। शोध इस साक्ष्य का समर्थन करता है कि व्यवहार में अंतर हैं जिन्हें लिंग के कारण जिम्मेदार ठहराया जा सकता है। उदाहरण के लिए, पुरुषों को महिलाओं की तुलना में अधिक आक्रामक दिखाया गया है। यह भी दिखाया गया है कि वे निगमनात्मक तर्क को प्राथमिकता देते हैं जबकि महिलाएं आगमनात्मक तर्क को पसंद करती हैं। इसके अलावा, पुरुष स्थानिक संबंधों और गणितीय प्रक्रियाओं के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं जबकि महिलाएं मौखिक रूप से संबंधित होती हैं और पुरुषों की तुलना में उनका बेहतर मोटर नियंत्रण होता है (कीफ, 1979)।

निष्कर्ष:

सीखने की शैलियाँ अनुसंधान का एक क्षेत्र है जिसमें शिक्षार्थी और शिक्षक दोनों के लिए कई उपयोगी कार्यान्वयन हैं। सीखने की शैलियों को बस उन विभिन्न तकनीकों के रूप में समझा जा सकता है जिनका उपयोग छात्र जानकारी को समझने और संसाधित करने और सीखने के माहौल के साथ बातचीत करने के लिए करना पसंद करते हैं। सीखने की शैलियों के विभिन्न आयामों की पहचान करने से शिक्षकों को शिक्षार्थियों की अनूठी विशेषताओं के बारे में अधिक जागरूकता मिलती है। शिक्षक इस जागरूकता का उपयोग छात्रों के सीखने को अधिकतम करने और विभिन्न शिक्षण शैलियों को शामिल करने वाली शिक्षण विधियों को विकसित करके प्रभावी शिक्षा का समर्थन करने के लिए कर सकते हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची:

- कैसिडी, एस. (2004); सीखने की शैलियाँः सिद्धांतों, मॉडलों और उपायों का अवलोकन, शैक्षिक मनोविज्ञान, 24 (4), 419-444।
- कैसिडी, एस., और ईचस, पी. (2000); सीखने की शैली, शैक्षणिक विश्वास प्रणाली, आत्म-रिपोर्ट छात्र दक्षता और उच्च शिक्षा में शैक्षणिक उपलब्धि, शैक्षिक मनोविज्ञान, 20, 307-322।
- क्लैक्सटन, डी.एस., और मुरेल, पी. (1987); सीखने की शैलियाँः शैक्षिक प्रथाओं में सुधार के लिए निहितार्थ (रिपोर्ट संख्या 4), वाशिंगटन, डीसीः उच्च शिक्षा के अध्ययन के लिए एसोसिएशन।
- क्लैक्सटन, डी.एस., और राल्स्टन, वाई. (1978); सीखने की शैलियाँः शिक्षण और प्रशासन पर प्रभाव (अनुसंधान रिपोर्ट संख्या 10), वाशिंगटन, डीसीः अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ हायर एजुकेशन।
- कॉन्स्टेंटिनिडौ, एफ., और बेकर, एस. (2002); सामान्य उम्र बढ़ने में उत्तेजना के तौर-तरीके और मौखिक सीखने का प्रदर्शन, मस्तिष्क

और भाषा, 82 (3), 296-311.
- क्रुइकशैंक, डी.आर., मेटकाफ़, के.के., और जेनकिंस, डी.बी. (2008); शिक्षण का कार्य (तीसरा संस्करण)।
- डन, आर. (1993); बहुसांस्कृतिक रूप से विविध सीखने की शैलियाँ, आपातकालीन लाइब्रेरियन, 20 (4), 24-32।
- गार्डनर, आर.डब्ल्यू., होल्ज़मैन, पी.एस., क्लेन, जी.एस., लिंटन, एच.बी., और स्पेंस, डी.पी. (1959); संज्ञानात्मक नियंत्रण. संज्ञानात्मक व्यवहार में व्यक्तिगत स्थिरता का अध्ययनः भाग 4. मनोवैज्ञानिक मुद्दे, न्यूयॉर्कः इंटरनेशनल यूनिवर्सिटीज़ प्रेस.
- गिब्सन, जे.एल., इवानसेविच, जे.एम., और डोनेली, जे.एच. (1994); संगठनः व्यवहार, संरचना, प्रक्रियाएं (8वां संस्करण), होमवुड, आईएलः इरविन।
- ग्रिग्स, एस.ए. (1991); सीखने की शैली परामर्श. एन आर्बर, एमआईः ईआरआईसी काउंसलिंग और कार्मिक सेवा क्लियरिंगहाउस, मिशिगन विश्वविद्यालय।
- हैरिसन, जी., एंड्रयूज, जे., और सकलोफ़स्के, डी. (2003); संज्ञानात्मक सीखने की शैलियों पर वर्तमान परिप्रेक्ष्य। शिक्षा कनाडा, 43 (2), 44-47।
- हिल, जे.ई., और ननेनेरी, डी.एन. (1973); शैक्षिक विज्ञान. ब्लूमफील्ड हिल्स, एमआईः ओकलैंड कम्युनिटी कॉलेज प्रेस।
- होल्ज़मैन, पी.एस., और क्लेन, जी.एस. (1954); संज्ञानात्मक प्रणाली- समतलन और तीक्ष्णता के सिद्धांतः दृश्य समय त्रुटि में आत्मसात प्रभाव में व्यक्तिगत अंतर, जर्नल ऑफ साइकोलॉजी, 37, 105-122।
- हंट, डी.ई. (1977)। शैक्षिक प्रथाओं के मार्गदर्शक के रूप में वैचारिक स्तर के सिद्धांत और अनुसंधान। इंटरचेंज, 8 (4), 78-90।
- हंट, डी.ई., बटलर, एल.एफ., नॉय, जे.ई., और रोसेर, एम.ई. (1978); अनुच्छेद पूर्णता विधि द्वारा वैचारिक स्तर का आकलन करना, अनौपचारिक शृंखला 13. टोरंटोः शिक्षा में अध्ययन के लिए ओंटारियो संस्थान।
- कगन, जे. (1966); चिंतन-आवेगः वैचारिक गति की व्यापकता और गतिशीलता, जर्नल ऑफ एब्नॉर्मल साइकोलॉजी, 71, 17-24।
- कीफे, जे.डब्ल्यू. (1979); सीखने की शैलीः एक सिंहावलोकन. जे. डब्ल्यू. कीफे (एड.) में छात्र सीखने की शैलियाँः निदान और कार्यक्रम निर्धारित करना (पीपी. 1-17), रेस्टन, वीएः नेशनल एसोसिएशन ऑफ सेकेंडरी स्कूल प्रिंसिपल्स।
- किर्बी, पी. (1979); संज्ञानात्मक शैली, सीखने की शैली और स्थानांतरण कौशल अधिग्रहण। सूचना श्रृंखला संख्या 195, कोलंबस, ओएचः ओहियो स्टेट यूनिवर्सिटी, नेशनल सेंटर फॉर रिसर्च इन वोकेशनल एजुकेशन, एरिक डाइजेस्ट 186685।
- मार्ज़ानो, आर.जे. (1998); निर्देश पर अनुसंधान का एक सिद्धांत-आधारित मेटा-विश्लेषण, अरोरा, सीओः मध्य-महाद्वीप क्षेत्रीय शिक्षा प्रयोगशाला।
- मैक्लेलैंड, डी.सी. (1971); समाज में प्रेरक प्रवृत्तियाँ, मॉरिसटाउन, एनजेः जनरल लर्निंग प्रेस।
- प्राइस, जी.ई., डन, आर., और डन, के. (1978); उत्पादकता पर्यावरण वरीयता सर्वेक्षण. लॉरेंस, केएसः प्राइस सिस्टम्स, इंक.
- रीचमैन, एस. (1978, सितंबर); सीखने की शैलियाँः शिक्षण मूल्यांकन और पाठ्यक्रम डिजाइन में उनकी भूमिका, अमेरिकन साइकोलॉजिकल एसोसिएशन, टोरंटो की 86वीं वार्षिक बैठक में पेपर पर नाराजगी व्यक्त की गई।
- रोटर, जे.बी. (1971); बाह्य नियंत्रण एवं आंतरिक नियंत्रण. मनोविज्ञान आज, 5, 1-28.
- स्टीवर्ट, के.एल., और फेलिसेट्टी, एल.ए. (1992); विपणन प्रमुखों की सीखने की शैलियाँ, शैक्षिक अनुसंधान त्रैमासिक, 15 (2), 15-23.
- विटकिन, एच. ए., और गुडएनफ़, डी. आर. (1981); संज्ञानात्मक शैलियाँः सार और उत्पत्ति, न्यूयॉर्कः इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी प्रेस.
- विटकिन, एच. ए., मूर, सी. ए., गुडएनफ़, डी. आर., और कॉक्स, पी. डब्ल्यू. (1977); क्षेत्र पर निर्भर और क्षेत्र स्वतंत्र संज्ञानात्मक शैलियाँ और उनके शैक्षिक निहितार्थ, शैक्षिक अनुसंधान की समीक्षा, 47, 1-64.
- विटकिन, एच.ए., ओल्टमैन, पी.के., रस्किन, ई., और कार्प, एस.ए. (1971); एम्बेडेड आंकड़े परीक्षणों के लिए एक मैनुअल, पालो ऑल्टो, सीएः कंसल्टिंग साइकोलॉजिस्ट प्रेस।
- वुड्रिज, बी. (1995); विश्वविद्यालय/कॉलेज निर्देश की प्रभावशीलता बढ़ानाः सीखने की शैली अनुसंधान के परिणामों को पाठ्यक्रम डिजाइन और वितरण में एकीकृत करना, आर.आर. सिम्स और एस.जे. सिम्स (एड्स.) में, सीखने की शैलियों का महत्व (पीपी. 49-67)। वेस्टपोर्ट, सीटीः ग्रीनवुड प्रेस।
- जैपाल्स्का, ए.एम., और डाब, एच. (2002); सीखने की शैलियाँ, जर्नल ऑफ टीचिंग इन इंटरनेशनल बिजनेस, 13, 77-97।